योगतन्त्र-ग्रन्थमाला [३५]

राधातन्त्रम्

कुलपतेः प्रो. यदुनायप्रसाददुषेमहोदयस्य पुरोवाचा विभूषितम्

सम्पादक:

डॉ. राजनाथत्रिपाठी

उपाचार्यचर:, सांख्ययोगतन्त्रागमविभागस्य सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये वाराणस्याम्



वाराणस्याम्

२०७३ तमे नैक्रमान्दे १९३८ तमे शकान्दे २०१६ तमे ख्रीस्तान्दे

विषय-सूची

| क्र.सं. | विषयसूची | पृष्टम् |
|---------|---|---------|
| | प्रथमः पटलः | |
| 1. | पार्वत्याः शिवेन प्रश्नः | 1 |
| 2. | वासुदेवरहस्यम् | 1 |
| 3. | ईश्वरस्य पार्वत्या उत्तरम् | 1 |
| 4. | श्रीविष्णोसिपुरादशमहाविद्यानामाराधनायादेशः | 1-2 |
| | द्वितीयः पटलः | |
| 5. | त्रिपुराप्रीतिः | 3 |
| 6. | श्रीवासुदेवाय कुलाचारोपदेशः | 3 |
| 7. | भोगेन योगः, दीक्षा, शिवनामानुकीर्तनम् | 3 |
| 8. | हरेर्नाममन्त्रः, हरेर्नाभ्रो देवता ऋषिशच्छदादयः | 3 |
| 9. | द्विजमुखेन हरेर्मन्त्रग्रहणम् | 3 |
| 10. | तदवदेव महाविद्यामन्त्राणां ग्रहणम् | 3-4 |
| 11. | हरेर्नाम्नि प्रत्यक्षरस्य रहस्यम् | 4-5 |
| 12. | हरेर्नामः देवता दीक्षा च | 6 |
| | तृतीयः पटलः | |
| 13. | षोडशे वर्षे दीक्षाविधानम् | 6-7 |
| 14. | विल्वेन शिवार्चनं विधाय पुनः-पुनः महाविद्यानां जपः- | 6 |
| 15. | वैष्णवीमालानां निरूपणम् | 7-8 |
| 16. | भालानां विविधनानानि | 8 |
| 17. | त्रिपुरा द्वारा श्रीकृष्णाय मालादानम् | 8 |
| 18. | पञ्चाशन्मणिमाला सर्वेष्टदा | 8-9 |
| 19. | मालामादाय श्रीकृष्णेन विभिन्नशक्तिपीठेषु गमनं | 9 |
| | शक्तीनां पूजनञ्च | |
| 20. | विभिन्नवर्णिकामालानां नामानि | 9 |
| 21. | आदिशक्तेरेव ब्रह्मा-विष्णुः-रुद्रः ईश्वरः-सदाशिवाज्योतिर्मन | याः 10 |
| | त्रिपुराद्वारा वासुदेवाय मालासिद्धिकथनञ्ज। | |

| 22. | वासुदेवेन त्रिपुराया देवीसूक्तेन समर्चनम् | 10 |
|-----|---|-------|
| 23. | मालाया महत्त्वमभिधाय त्रिपरायारन्तर्ध्यानम् | 11 |
| | चतुर्थः पटलः | |
| 24. | शिवेन कलावतीमालाप्रभावकथनं मालारहस्याय | 11-12 |
| | शिवायाः प्रश्नश्च | |
| 25. | कलावत्या वासुदेवो यादार्चनं स्मरणञ्च | 12 |
| 26. | शिवेन पार्वत्या मालारहस्यविषयकः प्रश्नः | 12 |
| 27. | शिवेन मालारहस्यकथनम् | 12 |
| 28. | विभिन्न मालानां प्रभावाः | 12 |
| 29. | विभिन्ना मालाः प्रभावाश्च | 13 |
| | पंचमः पटलः | |
| 30. | वासुदेवेन मालामणिषु कोटि-कोटि अण्डपिण्डानि दृष्टम् | 14 |
| 31. | प्रतिमणिभिर्विभिन्नडिम्भानां राशयः | 14 |
| 32. | वासुदेवेन प्रतिडिम्भे ब्रह्मविष्णुमहेश्वराणां स्थितिः | 14 |
| 33. | मधुरामण्डले गोवर्द्धनो गिरिः | 14 |
| 34. | गोवर्धनगिरिसुषमा विभिन्न पक्षिपशूनाञ्चाश्रयः | 14 |
| 35. | मथुरामण्डले वृन्दा एव कात्यायनीदेवी। | 14 |
| 36. | मथुरामण्डलं शिवशक्तिमयः | 14 |
| 37. | यमुना साक्षाच्छक्तिः | 14 |
| 38. | भारतवर्षे व्रजमण्डलस्य महत्त्वकथनम् शिवेन | 14 |
| 39. | ब्रह्माण्डे पृथक्-पृथक् डिम्बराशयः | 14 |
| 40. | गोवर्धनं नामा गाँ-मृग-गुल्य-गह्वर-कोटरान्वितः | 14 |
| 41. | त्रिपुरादेव्याः केशराशेरुपरिस्थितो मथुरामण्डलम् | 15 |
| 42. | त्रिपुरा एव यमुनापुलिने कात्यायनीरूपेण स्थिता | 15 |
| | षष्ठः पटलः | |
| 43. | देव्यारादेशेन वासुदेवस्य व्रजमण्डलेऽऽगमनम् | 15 |
| 44. | त्रिपुरां विना न मन्त्र-तन्त्रसिद्धिः | 15-16 |

| 4 | पद्मिनीं दृष्टवा नासुदेवस्याश्चर्यम्ः | 16 |
|-----------------|--|-------|
| 4 | पद्मिनी एव राधारूपेण वृक्भानुगृहे गोकुले समुत्पन्ना | 16-17 |
| 4 | काशीतः समागत्य देवी एव व्रजमण्डले राधा बभूव | 17 |
| | सप्तमः पटलः | |
| 4 | व्रजे गत्वा पद्मिनी किमरोत्युमाया महादेवेन प्रश्नः | 17 |
| 4 | महादेवस्योत्तरे पद्गन्धा पद्मिनी एव राधा | 18 |
| 4, | सा एव कृष्णस्य प्रथमं प्रिया, चैत्रे शुक्ले नवम्यां पुष्ये | 18 |
| | च तस्या आविर्भावः | |
| E . | अर्घरात्रौ राधाया आविर्भावः रक्तवर्णा तरुणादित्यसदृशा | 18 |
| | आसीत् | |
| 14 | वृषभानुपुरे कालिन्द्या उत्तरे चतुर्वर्णयुतं पद्मपुरम् | 18 |
| fa | वृक्भानुः स महात्मा कालिन्द्यास्तटे महाविद्यां | 18 |
| | कालीयन्त्रं प्रजपन्नासीत् | |
| 1,0 | सा काली महामाया कात्यायनी वृषभानोः करे आदेशं | 18 |
| | दत्तवती | |
| 1,0 | तत्त्रसाद एव राधा | 18 |
| 1. | वृषमानुपत्न्या आराधिता कात्यायनी तस्मै डिम्बमेकं | 19 |
| | प्रायच्छत् | |
| 50 | 7. वृक्भानुस्तत्क्षणमेव स्वगेहे पर्यङ्के भार्याये तद् डिम्बं ददौ | 19 |
| f _n | भार्याहस्ते दिम्बं द्विधा दृष्ट्वा परमेश्वरी विस्मिताऽभूत् | 19 |
| θ_{η} | तत्स्वरूपसंहरणाय मत्रा प्रार्थयामास येन सा डिम्बकन्या | 19 |
| | सामान्या अभवत् | |
| 6 | कन्यकावाक्येन तस्मै कीर्तिदा मात्रा स्व स्तनाभ्यां | 20 |
| | दुग्धमपाययामास | |
| 6 | पुनः पितृभ्यां कन्यकाया नाम राधिका दत्तयामासतुः | 20 |
| fi | एवं क्रमेण अग्रिमे भाद्रपदि कृष्णो अष्टम्यां कारागारे | 20 |
| | प्रादुरासीत् | |
| | | |

| 63. | एवं त्रिपुरायं कन्या-पुत्रस्य वा उत्पत्तिर्द्धिर्वर्षानन्तरं | | |
|-----|--|-------|---|
| | शिवलिङ्गस्य पूजनं कर्तव्यम् | 20 | |
| 64. | पुनः पद्मिनी द्वारा कात्यायन्या वरयाचनम् | 20-21 | |
| 65. | पद्मिन्यै (राधायै) श्रीकृष्णं प्राप्तुं करदानम् | 21 | |
| 66. | राधा अशरीराऽपि व्रजे पद्यवने निवसति | 21 | |
| 67. | मूलपद्मिनी राधया द्वितीया राधा ससर्ज | 21 | |
| 68. | मूलराषा अयोनिजा | 21 | |
| 69. | कृत्रिमराधायाः पञ्चमे वर्षे वृषभानुपिता विवाहं चकार | 21 | |
| 70. | वृक् (वृष) भानोः श्वसुरो मन्युकः कुबीनः, | 21 | |
| | श्वश्रुस्तु जटिला नाम्नी | | |
| 71. | एवं वृषभानुस्तस्य स्वसुरस्य दीर्घपरम्परा | 21-25 | |
| | सप्तमपटले निगदिता | | |
| 72. | राधायाः श्रीदामाष्ट्राता तथा मगिन्यो ललितादयः | 24 | |
| 73. | एवं सख्यः लक्षसंख्यायूथेषु विभक्ताः | 24-25 | |
| 74. | पुनः पद्मिनी राधा मातरं पितरञ्ज विहाय आत्मतुत्ये | 25 | |
| | पद्मवने निवसति | | |
| | अष्टमः पटलः | | |
| 75. | शिवेन देव्यै पुनः वृन्दावने श्रीकृष्णेन परमा राधया संगतिः | 25 | |
| 76. | द्वितीया राघाऽपि अयोनिजा यमुनाजलमध्यतो मूलराधामु- | 25-26 | |
| | त्पादिता | • | • |
| 77. | तृतीया चन्द्रावलीनागराधा वृषमानुगृहे स्थिता | 26 | |
| 78. | राधा त्रिपुराया अनुचरी | 26 | |
| | नवमः पटलः | | |
| 79. | नवमे पटले वासुदेवस्य जन्मरहस्यं व्रजमण्डलस्य महत्त्वञ्च | 26 | |
| 80. | श्रीकृष्णस्याभूषण-वसन-हसनादिचरितानि | 26 | |
| 81. | पितृष्यां प्रार्थनया श्रीविष्णोर्वासुदेवकृष्णस्य | 28 | |
| | माननीयबालरूपम | | |

| 11.7 | भगवत्या प्रार्थनया शिवेन श्रीकृष्णशरीरस्य वैचित्र्यनिरूपणम् 29 | | |
|------|--|-------|--|
| | दशमः पटलः | | |
| н., | दशमे पटले वृन्दावन-गोकुल-गोवर्धन-मयुरा-यमुनादीनां | | |
| | महत्वं महेशेन निगदितम् | 29 | |
| H 1 | माथुरं मण्डलं सहस्रपद्मदलाकारम् | | |
| | शक्तिकेशोपरिस्थितमित्यादि कथनम् | 29-32 | |
| | एकादशः पटलः | | |
| H 5: | अत्र पटले श्रीकृष्णबलरामयोर्बाल्यचरितानि विस्तृतम् | 32 | |
| 86. | माथुरमण्डले गोपीश्वरादि शिवलिङ्गानां स्थानं | | |
| | तत्समर्चेनेन सर्वेष्टसिद्धिष्ठ | 32 | |
| H.7 | वृन्दावने विभिन्नतनोपवनानां स्थितिः | 33-34 | |
| HH. | पार्वत्या वृन्दावनमाहातम्यप्रश्नः शिवस्य समाधानानि च | 34-38 | |
| | द्वादशः पटलः | | |
| н9. | द्वादशे पटले वासुदेव-गोप-गोपीनां महत्वं विधाय कुलाचारस्य | | |
| | पिण्डनिरूपणम् | 38 | |
| 90. | कृष्णशब्दस्य व्युत्पत्तिः | 38-39 | |
| | त्रयोदशः पटलः | | |
| 91. | यमुनातो व्रजमण्डले व्यापकत्वम् | 39-40 | |
| 92. | गोविन्दप्रियस्थानस्य परिचयः | 40-41 | |
| 93. | गोविन्दस्य शृङ्गारसामश्र्यः | 41-42 | |
| 94, | त्रिभक्कित्वम् वंशीवादनश्च | 42 | |
| | चतुर्दशः पटलः | | |
| 95, | इह पटले ध्यान-वृन्दावन-लता-मन्दारादयो | | |
| | मातृकाक्षररूपाः | 42-43 | |
| 96, | ध्यानपीठ-गोप-गोपीनाञ्च प्रकृतिरूपत्वम् | 43-44 | |
| 91. | शृङ्गारसामग्रीणां तात् विकं रू पम् | 44 | |
| 98. | शव्दब्रह्मणो महत्वारव्यानम् | 45 | |

पञ्चदशः पटलः

| 99. | श्रीकृष्णनखचन्द्रमहिमा | 45-46 |
|------|--|-------|
| 100. | नानामालानां महत्वम् | 46 |
| 101. | कृष्णस्य कृष्णत्वे कालिकायाः कारणता | 46 |
| 102. | वेद एव परब्रह्मकृष्णः | 47 |
| 103. | शब्दब्रह्माण्डस्यैव परब्रह्मणि कारणता | 47 |
| | षोडशः पटलः | |
| 104. | पद्मिन्या अंध्रिरजः स्पर्शात् कोटिडिम्बानामुत्पत्तिः | 47 |
| 105. | गोविन्दावरणानां पारिषद्यः राधासहिताऽन्यसखीनां | 48-50 |
| | बोडशमातृकात्यम् | |
| 106. | गोविन्दस्य भावः क्षरत्पयोधराः | 50 |
| 107. | वृन्दावनेऽपि रुक्मणी प्रभृति कृष्णपत्नीनां स्थितिः | 50 |
| 108. | श्रीकृष्णपीठस्योत्तरे रेवतीसहितस्य बलरामस्य पीठम् | 50-51 |
| 109. | अनिरुद्धसहिता उषानाम्नीतत्पत्न्यादीनां विवरणम् | 51 |
| 110. | गोविन्दपीठान्तिक एव सनकादिसिद्धानामासनानि | 52 |
| 111. | क्रमेण वैष्णवादीनां स्थानानि | 52 |
| 112. | सप्तावरणेषु तत्तद् भगवद्मूतींनां स्थितिः | 53 |
| | सप्तदशः पटलः | |
| 113. | एकस्यैव विष्णोर्वासुदेवस्य कलात्वमिति देव्याः प्रश्नः | |
| | शिवेनोत्तरम् | 54 |
| 114. | मश्रुरायामुत्पत्तिर्द्वारकायां वासुदेवस्य शरीरत्यागस्य | |
| | प्रश्नोक्तरम् | 54-56 |
| 115. | श्रीकृष्णशरीरस्य तात्विकं रूपम् | 54-56 |
| | अष्टादशः पटलः | |
| 116. | पटलेऽस्मिन् द्विविधराधातत्त्वस्याऽऽख्यानम् | 57-59 |
| 117. | राधातन्त्रस्य महिमा च | 59 |
| 118. | कात्यायनीदेव्या रहस्यं मन्त्राश्च | 59-60 |
| | | |

उनविंशः पटलः

| 119. | श्रीकृष्णस्य पारिवारिकाः सखादयश्च | 60-62 |
|------|--|-------|
| 170. | श्रीकृष्णस्य सेवकाअंगमङ्गाश | 62-65 |
| 121. | अष्टौदोषाः | 65 |
| 122. | अष्टादशीदोषरहिता भगवत्तनुः | 66 |
| 123. | श्रीकृष्णस्य शरीररचना | 66-67 |
| 124. | पद्मिनीतत्त्वाख्यानम् | 67-68 |
| 175. | पदमिन्या (राधायाः) साधनमन्त्राः | 68 |
| 126. | कात्यायन्या कृष्णाय वरदानम् | 69-70 |
| | विंशःद्वाविंश पटलः | |
| 127. | पटलेऽस्मिन् राधाकृष्णयोरनुष्ठानमन्त्रा विधिश्च | 70 |
| 128. | राधा-चन्द्रयोरुत्पत्तिः | 71 |
| 179. | विभिन्नराधानां समाख्यानम् | 71-73 |
| 130. | राधयासह नौकया कृष्णस्य यमुना विहारो महारासश्च | 74-75 |
| | त्रयोविंश चतुर्विश्चः पटलः | |
| 131. | पद्मिनीतत्त्वनिरूपणं नौकाविहारश्च | 75-77 |
| 112. | हास-परिहासाः | 77-79 |
| 143. | दिधदानादानम् | 79-80 |
| | अय पञ्चविश्च पटलः | |
| 134. | राधाया दन्तावल्यो मुक्ताफलोपमाः | 80-82 |
| FU. | श्रीकृष्णस्याभूषणानि रमणञ्ज | 82-83 |
| 136. | कुलाराधनेऽमृतासवः | 83-84 |
| 117. | राधाकृष्णयोः प्रणयस्वरूपम् | 84-85 |
| 148. | राधामाधवयोः स्वरूपपरिवर्तनम् | 85-86 |
| 139. | कालिकादेव्याः श्रीकृष्णस्याशीर्वादः | 86 |
| | अय षड्विंशतोऽष्टविंशश्च पटलः | |
| 140 | पटलेऽत्र राधामाधवयोर्यमुनापुलिने विहारः | 87 |
| | | |

| | (8) | |
|---------|--|---------|
| 141. | द्रारिकायामपि राधया श्रीकृष्णस्य सूक्ष्मो विहारः | 88 |
| 142. | देवर्षिनीरदस्य द्वारिकायां समागमः कृष्णेनालापश्च | 89 |
| 143. | श्रीकृष्णस्य अष्टपदमहिष्य अष्टप्रकृत्युपमाः | 90-91 |
| 144. | द्वारकायास्तात्तात्त्विकं स्वरूपम् | 91-93 |
| 145. | प्रतिकल्पे द्वारकाया आविर्भावः | 93 |
| 146. | पद्मिनीशक्तिः उपविञ्च तस्याराधनमन्त्राश्च | 93-94 |
| 147. | जपामन्त्रोपाख्यानम् | 95-96 |
| | उनविंशः पटलः | |
| 148. | भूत्यातिशुद्धयः कवचञ्च | 97 |
| 149. | राधाकवचम् ऋषि-छन्द-देवता-विनियोगाश्च | 97-114 |
| | त्रिंशः पटलः | |
| अथ राहि | धकासहस्त्रनामस्तोत्र म् | 114-116 |
| 150. | अथ पूर्णाभिषेकः | |
| 151. | भगवत्याः प्रश्ने शिवेन हरेर्नाममाहात्म्याख्यानम् | |
| 152. | राधातन्त्रमाहातम्यमन्छानञ्च | |